

UGC-CARE enlisted & Indexed in the EBSCO International Database of Journals

भारतीय संगीत के प्रकाशन का इतिहास और विकास (पंजाबी भाषा के विशेष संदर्भ में)

रिशपाल सिंह विर्क
असिस्टेंट प्रोफेसर
सेंट्रल यूनिवर्सिटी आफ़ पंजाब, बठिंडा
पंजाब
Email: rishpalsinghvirk@gmail.com

सारांश

प्रत्येक संस्कृति और विरासत की पृष्ठभूमि को जानने के लिए मुख्य स्रोत के रूप में उस संस्कृति से संबंधित ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक होता है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति में संगीत का उल्लेखनीय स्थान है। भारतीय परंपरा में संगीत को गुरुमुखी शिक्षा का स्थान प्राप्त है। आरम्भ से ही संगीत की शिक्षा गुरु शिष्य परंपरा के पवित्र बंधन के अनुसार प्रवाहित होती रही है। इसमें कोई शक नहीं है कि गुरु शिष्य परम्परा में संगीत का क्रियात्मक पहलू प्रबल रहा है। संगीत, बेशक एक क्रियात्मक कला है, लेकिन सैद्धांतिक पहचान के बिना किसी भी सभ्यता, संस्कृति और परंपरा के अस्तित्व को खोने का खतरा है। इसलिए संगीत कला की पहचान और अस्तित्व को बनाये रखने के लिए अनेक संगीत गुरुओं, लेखकों, चिंतकों, और विद्वानों ने संगीत के क्षेत्र में प्रकाशन का कार्य किया जिसके ऐतिहासिक विकास की चर्चा प्रस्तुत शोध पत्र में की गयी है।

विशेष शब्द: गुरुमुखी शिक्षा, संगीत प्रकाशन, पुस्तक, पंजाबी भाषा

किसी देश की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में ग्रंथों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक संस्कृति और विरासत की पृष्ठभूमि को जानने के लिए मुख्य स्रोत के रूप में उस संस्कृति से संबंधित ग्रंथों का अध्ययन आवश्यक होता है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति में संगीत का उल्लेखनीय स्थान है। भारतीय परंपरा में संगीत को गुरुमुखी शिक्षा का स्थान प्राप्त है। आरम्भ से ही संगीत की शिक्षा गुरु शिष्य परंपरा के पवित्र बंधन के अनुसार प्रवाहित होती रही है। इसमें कोई शक नहीं है कि गुरु शिष्य परम्परा में संगीत का क्रियात्मक पहलू प्रबल रहा है। संगीत, बेशक एक क्रियात्मक कला है, लेकिन सैद्धांतिक पहचान के बिना किसी भी सभ्यता, संस्कृति और परंपरा के अस्तित्व को खोने का खतरा है, इसलिए संगीत कला की पहचान और अस्तित्व को बनाये रखने के लिए अनेक संगीत गुरुओं, लेखकों, चिंतकों, और विद्वानों ने संगीत की क्षेत्र में प्रकाशन का कार्य किया। संगीत में सैद्धांतिक पहलू को संरक्षित करने के लिए ही ग्रंथ लिखने की परंपरा प्रचलित रही है।

UGC-CARE enlisted & Indexed in the EBSCO International Database of Journals

वेद भारतीय सभ्यता और संस्कृति का मूल आधार हैं। भारतीय संगीत का आधार भी वेद हैं। सामवेद पूर्ण रूप में गेय ग्रंथ है जिसके मन्त्रों का उच्चारण संगीतमय है। इसके बाद रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता और कई अन्य महाकाव्य की रचना हुई जिसके परिणामस्वरूप आज हम अपनी समृद्ध सभ्यता, संस्कृति और विरासत को संरक्षित करने में सक्षम हो पाए।

संगीत हमेशा से भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग रहा है इसलिए इस महान कला को संरक्षित करने के लिए शुरु से ही प्रयास किए गए हैं। आध्यात्मिक काव्य के बाद संगीत पर सबसे पहले संस्कृत प्रकाशनों में भरतकृत नाट्य-शास्त्र का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कालांतर में भारतीय संगीत में ग्रन्थ और पुस्तकें लिखने की परंपरा में वृद्धि हुई परिणाम स्वरूप नारदीय शिक्षा (नारद, 6वीं शताब्दी), बृहदेशी (मतंग मुनि, 6वीं शताब्दी), संगीत मकरंद (नारद, 8वीं शताब्दी), गीतगोविंद (जयदेव, 12वीं शताब्दी); संगीतरत्नाकर (शारंगदेव, 13वीं शताब्दी की अर्धशतक), स्वरमेलकलानिधि (रामामात्य, 1550); रागतरंगिणी (कवि लोचन, 1685 ई.), रागमाला, राग मंजरी, सद्रागचंद्रोदय (पुण्डरीक विट्ठल 1600 ई.); हृदय कौतुक, हृदयप्रकाश (हृदयनारायण देव, 1667 ई0); राग विबोध (सोमनाथ, 1610), संगीत पारिजात (अहोबल, 1650 ई.), अनूप संगीत विलास, अनूप संगीत रत्नाकर, अनूपाकुंश (भावभट्ट, 1674-1704), चतुर्दशीप्रकाशिका (पंडित व्यंकटमखी, 1635 ई.), संगीत दर्पण (प0 दामोदर 1625 ई0), रागतत्त्वविबोध (श्री निवास 18वीं शताब्दी), नगमाते आशफी (मोहम्मद रजा 1813 ईस्वी) और रागकल्पद्रुम (कृष्णानंद व्यास 1842) आदि ग्रन्थ संगीत परम्परा की धरोहर बने। यही परम्परा दिन ब दिन बढ़ती गयी और आधुनिक युग तक के सफ़र में पुस्तकों का एक भण्डार स्थापित हो गया।

आधुनिक युग में अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में भी पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं। हिंदी और पंजाबी भाषाओं के विद्वानों के अलावा कुछ यूरोपीय विद्वानों ने भी भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन किया और भारतीय संगीत पर आधारित अंग्रेजी भाषा में पुस्तकें लिखीं। पश्चिम विद्वानों में से एक एलेन डेनियलौ (1913) ने 'एन इंट्रोडक्शन टू दि स्टडी ऑफ म्यूजिकल स्केल' फॉक्स स्त्रोंगवेज ने 'दि म्यूजिक ऑफ हिंदुस्तान, विलियर्ड एन औग्सतुस 'टेराटइस ओन दि म्यूजिक ऑफ हिंदुस्तान', विलियम जॉस ने 'ओन द म्यूजिकल मोड्स ऑफ हिन्दुस्' और इ. क्लेमेंट्स ने 'इंट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ इंडियन म्यूजिक' (1912) नामक पुस्तकें प्रकाशित की। इसके अलावा भारतीय विद्वानों में जी.एच. रानाडे ने 'हिंदुस्तानी संगीत', वी.आर. देशपांडे ने 'इंडियन म्यूजिकल ट्रेडिशन' आदि पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में लिखी।

हिन्दी भाषा में संगीत विषय की आरंभिक पुस्तकों की बात करें तो 1888 ई. में उस्ताद मौलाबख्श द्वारा 'संगीतानुभव' नामक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होंने संगीत की रचना और रचना की विधि का वर्णन किया है। 1888 ई में मुर्तजा खान मौलाबख्श की पुस्तक 'संगीत सलामांचालती गायन' अलाउद्दीन मौलाबख्श की 'सितार शिक्षा' और उस्मान खान की 'ताल पद्धति' पुस्तकें प्रकाशित हुईं।¹ रामशंकर भट्टाचार्य के शिष्य क्षेत्रमोहन गोस्वामी ने हिंदुस्तानी संगीत आधारित एक पुस्तक लिखी और नई हिंदुस्तानी स्वरलिपि का आविष्कार किया। पंडित विष्णु नारायण

UGC-CARE enlisted & Indexed in the EBSCO International Database of Journals

भातखंडे ने 1909 ई. में संस्कृत भाषा में 'श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम' नामक एक पुस्तक लिखी और 'चतुर' उपनाम से प्रकाशित करवाया. आज मूलरूप में प्राप्त मध्यकालिक ग्रन्थों के प्रकाशन का श्रेय धाकलीबाई के पुत्र श्री भालचन्द्रसीताराम सुकथनकर जी को जाता है और इनके द्वारा ही भातखण्डे जी के ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया जिनमें अभिनवराग मंजरी (1921) और श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम जिसकी रचना संस्कृत में सन 1909 ई० में की गई तथा जिसकी मराठी में टीका हिंदुस्तानी संगीत पद्धति के नाम से चार भागों में प्रकाशित की गई जिसका अनुवाद और प्रकाशन बाद में संगीत कार्यालय हाथरस उ.प्र. द्वारा भातखण्डे संगीत शास्त्र के नाम से चार भागों में किया गया.² संगीत में ग्रंथों के महत्व को समझते हुए पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी ने प्राचीन ग्रन्थों का अन्य भाषाओं में अनुवाद और प्रकाशन करवाया ताकि आने वाली पीढ़ियों को यह हस्तांतरित होता रहे.

समय-समय पर संगीत के सैद्धांतिक और व्यवहारिक दोनों पहलुओं पर पुस्तकें प्रकाशित होती रही हैं. संगीत के सैद्धांतिक पक्ष से संबंधित एक उदाहरण के रूप में के. वासुदेव शास्त्री ने संगीतशास्त्र (1958), डॉ. शरतचंद श्रीधर परांजपे ने संगीत बोध (1972), प्रो. ललित किशोर सिंह ने ध्वनि और संगीत (1955), आचार्य बृहस्पति ने संगीत चिंतामणि (1989), डॉ. सुनंदा पाठक ने हिंदुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति और विकास (1989), पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने 'संगीत बालबोध', 'संगीत तत्त्व दर्शन; पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर के शिष्य पंडित विनायक राव पटवर्धन के 'नाट्य संगीत प्रकाश', 'संगीत प्रकाश राग विज्ञान' और 'बाल संगीत'; डॉ. मधुबाला सक्सेना व डॉ. राकेश बाला सक्सेना ने संगीत मधुबन (2001); डॉ. माया सिंह टाक ने 'संगीत संपदा' (2002) और क्रियात्मक संगीत से संबंधित पंडित विष्णु नारायण भातखंडे ने 1910 में 'क्रमिक पुस्तक मालिका' नामक पुस्तक छह भागों में प्रकाशित हुई, जिसे संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली को देखते हुए क्रियात्मक क्षेत्र का खजाना माना जाता है. इस दौरान पंडित विनायक राव पटवर्धन ने 'राग विज्ञान' (7 भाग), आचार्य कृष्ण नारायण रातनजंकर ने 'अभिनव गीत मंजरी' (3 भाग), जय देव पाटकी ने 'अचल राग' (3 भाग), पंडित ओंकार नाथ ठाकुर ने 'संगीतांजलि' (5 भाग) की रचना की. प० रामाश्रय झा ने 'अभिनवगीतांजलि' (1968-1991), आचार्य बृहस्पति ने 'राग रहस्य' (1968) जैसी पुस्तकें प्रकाशित की. उपरोक्त पुस्तकों के अलावा इस काल में कई महत्वपूर्ण पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं. तब से पुस्तक लेखन की परंपरा लगातार विकसित हो रही है और आज इसने अपना समृद्ध साम्राज्य स्थापित किया है.

प्राचीन समय में संस्कृत-अरबी, मध्यकालीन और आधुनिक समय में अंग्रेजी और हिंदी भाषा में पुस्तकें प्रकाशित हुईं. हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं के साथ-साथ और क्षेत्रीय भाषाओं में भी पुस्तकों का प्रकाशन हुआ. संगीत प्रकाशन में पंजाबी भाषा के अंतर्गत संगीत प्रकाशनों के प्रारंभिक कार्य 19वीं शताब्दी के अंत में शुरू हुआ और इसका प्रकाशित रूप 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में उभरना शुरू हुआ.³ सिख धर्म के अनुयायी होने के नाते पूरा पंजाबी समुदाय शुरू से ही संगीत को आध्यात्मिक रूप में स्वीकारता रहा है जिसके परिणामस्वरूप पंजाबी भाषा में संगीत के प्रारंभिक प्रकाशन भी गुरुमत संगीत विधा के अनुकूल प्रकाशित हुए. गुरुमत संगीत को आम लोगों तक पहुंचाने के लिए प्रो. सुंदर सिंह, ज्ञानी ज्ञान सिंह एबटाबाद, प्रो. गुरदयाल सिंह, संत सरवन सिंह डुमेली वाले, संत जुगिंदर सिंह

UGC-CARE enlisted & Indexed in the EBSCO International Database of Journals

सरल, मास्टर निहाल सिंह, भाई अवतार सिंह, भाई गुरचरण सिंह रागी और प्रो. तारा सिंह जैसे प्रसिद्ध विद्वानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया.

सन् 1913 में प्राप्त सन्दर्भों के अनुसार प्रो. सुंदर सिंह ने 'हरमेनियम कीर्तन सिखया' नामक एक पुस्तक लिखी जिसे भाई उत्तम सिंह, भाई गुरचरण सिंह, अमृतसर ने प्रकाशित किया और 1940 में इसी पुस्तक को भाई उत्तम सिंह, भाई गुरचरण सिंह, अमृतसर द्वारा पुनर्मुद्रित किया गया. 1918 में भाई साहब सिंह ने 'राग माला प्रबोध' नामक पुस्तक लिखी. देखा जाये तो 1950 से पहले पंजाबी भाषा में संगीत कला से संबंधित कोई भी मौलिक पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई. 1958 में सिख कीर्तन मर्यादा से संबंधित भाई चरण सिंह रचित पुस्तक 'गुरमत संगीत पर मिली हून तक दी खोज' का उल्लेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है. इसके बाद शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के तत्वावधान में धर्म प्रचार कमेटी, अमृतसर द्वारा 1961 में प्रकाशित और ज्ञानी ज्ञान सिंह द्वारा लिखित पुस्तक 'गुरबानी संगीत' का प्रकाशन किया गया. उसी समय एक और उभरता हुआ नाम स. रवेल सिंह 'रावेल' का सामने आता है, जिन्होंने गुरमत संगीत के प्रचार और प्रचार के लिए वर्तमान सदी के मध्य में पटियाला से मासिक पत्रिका शुरू की, परन्तु आर्थिक तंगी के कारण यह पत्रिका बहुत जल्दी बंद हो गयी.⁴

1971-1972 में डॉ. अजीत सिंह पैतल ने 'भारती शास्त्री संगीत विच सिख संगीत दी नुहार अते महत्ता' नामक पुस्तक प्रकाशित की. वहीं पंजाबी भाषाई संगीत प्रकाशन के क्षेत्र में सफल नाम संगीताचार्य प्रो. तारा सिंह का सामने आता है. प्रो तारा सिंह की रचना 'श्री गुरु तेग बहादुर राग रत्नावली' सिख संगीत जगत में निकली पहली रचना है. यह पुस्तक पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला ने 1977 में श्री गुरु तेग बहादुर की शहादत की तीसरी शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित की. साथ ही श्री गुरु अमर दास जी की पांचवी जन्म शताब्दी को ध्यान में रखते हुए पंजाब सरकार ने जन सम्पर्क विभाग ने इसका प्रकाशन करवाया. 1977 में श्री. पियारा सिंह ने 'गुरवंदन संगीत' नामक पुस्तक लिखी. प्राचीन शब्दों की रिकार्डिंग को स्वर लिपियों में तब्दील करके भाई अवतार सिंह और भाई गुरचरण सिंह ने 'गुरबानी संगीत प्राचीन रीत रत्नावली' नामक एक पुस्तक लिखी, जिसे पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला ने 1979 में प्रकाशित किया. 1979 में प्रो. गुरदयाल सिंह द्वारा 'राग प्रबोध' और संत जुगिंदर सिंह सरल द्वारा 'हरि कीर्तन सिखया' नामक पुस्तकें प्रकाशित की गईं. 1982 में पंजाब सरकार द्वारा स्थापित यूनिवर्सिटी टेक्स्ट बोर्ड ने ए. एस. गोसल की किताब 'सिख धर्म और संगीत' प्रकाशित की गई थी, इस पुस्तक में शोधक का कार्य प्रो. तारा सिंह ने किया और इस पुस्तक के संपादक डॉ. मोहन सिंह 'रत्न' को बताया गया है.

20वीं शताब्दी के मध्य के बाद संस्थागत शैक्षणिक संस्थानों में संगीत के स्वतंत्र विषय के रूप में प्रचलित हो जाने के बाद कई प्रकाशकों और बौद्धिक संगीतकारों के पंजाबी भाषा में संगीत प्रकाशन के कार्य की गति को और तेज किया. इन प्रकाशकों में धर्म प्रचार कमेटी, अमृतसर, चीफ खालसा दीवान, अमृतसर, भाषा विभाग, पटियाला, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला और गुरुद्वारा गुरु ज्ञान प्रकाश जव्दी कला के विसमाद नाद का योगदान उल्लेखनीय है.

UGC-CARE enlisted & Indexed in the EBSCO International Database of Journals

धर्म प्रचार कमेटी, अमृतसर गुरुमत संगीत के प्रचार के लिए लगभग 15 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला की स्थापना 1962 में पंजाब अधिनियम संख्या के तहत की गई थी। अधिनियम के तहत, इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य पंजाबी भाषा, पंजाबी अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए और शिक्षण और सीखने के माध्यम के रूप में पंजाबी भाषा के विकास के लिए या अन्य क्षेत्रों में शिक्षा और अनुसंधान की उन्नति के लिए एक विश्वविद्यालय स्थापित करना है। इस अधिनियम के तहत 30 अप्रैल 1962 को पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला की स्थापना की गई।⁵ पंजाबी भाषा के विकास के लिए पंजाबी यूनिवर्सिटी, द्वारा पंजाबी भाषा विभाग की स्थापना की गई। 1961 के अधिनियम 35 के तहत, यह सहमति हुई कि पंजाबी यूनिवर्सिटी, में पंजाबी भाषा शिक्षा का माध्यम होगी। इसके लिए पंजाबी यूनिवर्सिटी ने धर्म, दर्शन, विज्ञान और कला पर पुस्तकें प्रकाशित की। पंजाबी यूनिवर्सिटी के कई विद्वानों ने पंजाबी भाषा के प्रकाशनों में भी अमूल्य सेवा प्रदान की है, जबकि पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला ने अब तक इस विषय पर लगभग 60 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। पिछले समय में प्रो. तारा सिंह जी की वादन कला की रचना गुरुमत प्रकाशन पटियाला द्वारा पुनर्प्रकाशित की गई है।

संगीत के प्रकाशन के विकास में शोध पत्रिकाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संगीत कला से संबंधित प्रमुख पत्रिकाओं में संगीत (संगीत कार्यालय, हाथरस), संगीत कला विहार (पुणे), संगीत नाटक अकादमी (दिल्ली), इंडियन म्यूजिकोलॉजीकल सोसाइटी बड़ौदा, अमृत कीर्तन (चंडीगढ़), नादनर्तन (दिल्ली)⁶, समकालिक संगीतम⁷, संगीत गैलेक्सी, संगीतिका, श्रुति⁸, स्वर सिन्धु⁹ (हिमाचल प्रदेश), वागेश्वरी (दिल्ली), आदि शामिल हैं। इसके इलावा विस्मादनाद (गुरुद्वारा गुरु ज्ञान प्रकाश जव्दी कलां), सामाजिक विज्ञान पत्रिका (पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला), गुरुमत संगीत कीर्तन अंक (अमृतसर), गुरुमत प्रकाश (अमृतसर), सिंह सभा पत्रिका-कीर्तन अंक (अमृतसर) आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं जिन्होंने संगीत कला के प्रचार प्रसार में उल्लेखनीय योगदान दिया। संगीत गैलेक्सी भारतीय संगीत को समर्पित प्रथम ई-पत्रिका है, जो वर्ष 2012 से अनवरत प्रकाशित होती आ रही है। जिससे संगीत में लेख व शोध पत्र प्रकाशन को त्वरित गति मिली है। यह पत्रिका संगीत शिक्षा एवं शोध के स्तर में सुधार करने व उसमें पारदर्शिता लाने के लिए निरंतर प्रयासरत है¹⁰।

निष्कर्ष:

भारतीय संगीत में ग्रंथ लेखन की परंपरा प्राचीन काल से विभिन्न भाषाओं द्वारा प्रवाहित होती रही है। संस्कृत-अरबी, हिंदी और अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में भी पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। वर्तमान समय में संगीत कला के प्रकाशन में दिन ब दिन वृद्धि हो रही है। अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की तुलना में, पंजाबी भाषा के संगीत प्रकाशन बहुत बाद में शुरू हुए थे लेकिन समय-समय पर संगीत के विद्वानों, लेखकों और शोधकर्ताओं ने अपने ज्ञान और शोध को पुस्तकों के रूप में प्रकाशित करके संगीत के सैद्धांतिक और क्रियात्मक पहलुओं को संरक्षित करने का प्रयास किया है और निरंतर जारी है। वर्तमान समय में प्रकाशित हो रहे अत्याधिक कार्यों में मौलिकता की कमी दृष्टिगत होती है।

UGC-CARE enlisted & Indexed in the EBSCO International Database of Journals

पुस्तकों की रचना करते समय संख्या से अधिक गुणवत्ता को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है. जिस से हमारी सभ्यता और संस्कृति का मूल बना रहे.

संदर्भ:

¹ Choudhary, Manjushri. Indian Music in Professional and Academic Institute. South Asia Books. 1999. p. 85.

² Tripathi, Deepak Kumar. “Sangeet Granthon ka Sanrakshan va Prakashan: Ek Vivechan”. *Sangeet Galaxy e-Journal*. 6, no. 1 (January 2017): 43 <https://sangeetgalaxy.co.in/>

³ Interview, Dr. Yashpal Sharma, Panjabi University. Patiala.

⁴ Interview, Balbir Singh Kanval, Landon.

⁵ University Calendar 1990, p.12

⁶ Naad-Nartan Journal of Dance and Music, ISSN:2349-4654.

⁷ Samakalika Sangeetham, Journal ISSN: 2319-3506

⁸ Shruti, Journal, ISSN: 0970-7816

⁹ Swar Sindhu, ISSN 2320–7175 <http://swarsindhu.pratibha-spandan.org>

¹⁰ Verma, Amit Kumar. “Online Prakashan Samay ke Sath Jugalbandi hai”. *Kala Drishti*, Nagpur: Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya. 2019: 7-9.